Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 5.029
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 12, No. 1, January 2022 ISSN : 2250-1193

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना और पंडित दीनदयाल उपाध्याय

डॉ. मलकीयत सिंह
सह प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धर्मशाला

वर्तमान परिदृश्य में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना और कार्यान्वयन के प्रयास बढ़ गए हैं। आत्मनिर्भरता क्या है? और क्या यह संकल्पना नयी है यह आजकल चर्चा का विषय है आत्मनिर्भरता की संकल्पना को पूरा करने की लिए गोष्ठियों हो रही हैं। सरकार द्वारा कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं और इस विषय पर लगातार विचार विमर्श हो रहा है।

वास्तव में किसी भी देश का विकास तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर निर्भर करता है: 1. मानव संसाधन, 2. प्राकृतिक संसाधन एवं 3. तकनीक।

भारतवर्ष संयोग से मानव संसाधनों से परिपूर्ण है जहां की जनसंख्या विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या है | प्राकृतिक संपदा एवं जलवायु जो भारतवर्ष में उपलब्ध है शायद ही अन्य किसी देश में है | तीसरा मुख्य बिंदु तकनीकी क्षेत्र का है। भारतवर्ष में परंपरागत तकनीक का प्रयोग होता है लेकिन साथ ही वैश्विक नई तकनीक का भी उपयोग त्वरित गति से प्रचलन में आ रहा है आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को इन तीनों बिंदुओं के परिपेक्ष्य में ही देखा जाना चाहिए और यह बिंदु शोध के विषय बनने चहिए| इन बिंदुओं में से किसी एक को भी छोड़ कर सतत विकास की परिकल्पना नहीं की जा सकती संक्षेप में कहें तो कह सकते हैं कि मानव संसाधनों को शिक्षा के साथ-साथ कौशल की आवश्यकता है जिससे कुशल श्रम अपने देश के विकास के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी अपनी सेवाएं देने में सक्षम हो सके प्राकृतिक संसाधनों का उचित दोहन उचित देखरेख तथा जलवायु के आधार पर हो | प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु कार्य योजना बनाना समय की मांग है जिसके आधार पर भारत विश्व में पाए जाने वाले किसी भी कृषि उत्पाद को अपने यहां पैदा कर सके और पूरे विश्व कोष की पूर्ति कर सके | इन दोनों बिंदुओं का विकास तकनीकी विकास की गति पर निर्भर करता है कि हम कितनी जल्दी नई तकनीक को अपनाकर परंपरागत तकनीक और विकसित कर सकें जिससे कि हम प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो सकें आत्मनिर्भरता से अभिप्राय है कि हमारे उपभोग की कोई भी वस्तु हम स्वयं पैदा कर सके हमारा देश पैदा कर सके उसके लिए हम को विदेशों पर निर्भर न रहना पड़े |

भारत को आत्मनिर्भर बनाने का विचार भारत के लिए कोई नया विचार नहीं है। गुरु नानक देव जी ने यह संदेश अपने आध्यात्मिक यात्रा को पूरा करके सांसारिक जीवन जीने और कर्म करने एवं मिल बांटकर ग्रहण करने का संदेश देकर दिया था। "1

इसी तरह विचार पंडित दीनदयाल जी ने एकात्म मानवतावाद के माध्यम से यह विचार प्राथमिकता के आधार पर प्रस्तुत किया था। अपने भाषणों और लेखों में, दीनदयाल उपाध्याय ने तर्क दिया कि 'एकात्म मानव दर्शन' विशुद्ध रूप से समय-परीक्षणित भारतीय लोकाचार और सभ्यतागत मूल्यों पर आधारित है, जो लोगों को उनके जन्मजात कौशल और आंतरिक कारकों का पता लगा कर उसे विकास की प्रक्रिया में गौरवान्वित रूप से भागीदार बनाने में विश्वास करता है। उन्होंने यह भी कहा कि यह भारतीय आर्थिक सोच साम्यवाद और पूंजीवाद का एक व्यवहारिक विकल्प है क्योंकि यह एक राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण पर आधारित है।'2

गाँधी जी ने भी ग्रामीण, कुटीर उद्योग, धंधो से गांवों को विकसित करने का विचार दिया था। दीनदयाल जी व् गाँधी जी दोनों ही भारी उद्योग धंधों से पहले कुटीर उद्योग धंधों से गांवों को सशक्त व् समृद्ध व् आत्मनिर्भर बनाने के विचार का आहवान करते रहे। आज आज़ादी के सात दशकों बाद उनके विचारों की कितनी अधिक प्रासंगिकता है यह दर्शनीय है।

अंधाधुंध शहरी विकास, उस ओर पलायन करते, रोज़गार तलाशते लोगों को देख दीनदयाल जी का कहना था, शहरी विकास गांवों के लोगों के लिए परमुखापेक्षी विकास के पायदान जैसा है, जो स्वभावतः क्षणिक ही होता है। विपरीत परिस्तिथियों में डगमगाता ही है।

इससे अभिप्राय है कि लोगों को विकास की प्रक्रिया में गर्व के साथ भागीदार बनाया जाना चाहिए। इस संबंध में, पंडित दीनदयाल जी ने कहा कि बड़े पैमाने पर 'उत्पादन' के बजाय यह 'जनता द्वारा उत्पादन' होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में लोगों की भारी भागीदारी हो जो, रोजगार उत्पन्न करने की क्षमता व स्थाई रोजगार को बढ़ाता है।

वर्तमान विपरीत परिस्थितियों में आत्मनिर्भर भारत विचार की प्रासंगिकता बहुत बढ़ गई है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय दूरदर्शी एवं दूरदृष्टा थे, वह जानते थे, हमारे राष्ट्र विकास की नींव हमारे अपनों द्वारा, अपनों के लिए नहीं रखी गई है। इसलिए वे चाहते थे कि हमें अपने यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध संसाधनों व् अपने परम्परागत उधोग धंधों को विकसित कर, अपने समाज व् राष्ट्र को सशक्त व् आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करना चाहिए।

आत्मनिर्भर भारत भारतीय राजनितिक गलियारों, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों व् सामान्य जनमानस में चर्चा का सबसे महत्वपूर्ण विषय है। जिन्होंने समाज, राष्ट्र व् राजनीति पर गहन चिंतन व् विचार कर, इन्हे अपनी मूल संस्कृति व् चिंतन से जोड़ने के लिए समाज व् राष्ट्र का मार्गदर्शन किया, किन्हीं कारणों से इनके विचार समाज व् राष्ट्र के समुख नहीं आ पाए।

पंडित दीनदयाल जी का कहना था, "जिस प्रकार एक राष्ट्र के रूप में, राष्ट्र उन्नति व् गौरव का हम विचार करते है, तो हम कहते हैं, कि राष्ट्र की सच्ची स्वतंत्रता उसके सांस्कृतिक उन्नति में निहित है। … जिस देश की संस्कृति खतरे में हो, वह देश चाह कर भी स्वतंत्र नहीं रह सकता। इसी तरह दीनदयाल जी का मत था, "जिस प्रकार देश सांस्कृतिक रूप से स्वतंत्र हो, उसी प्रकार आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र होना चाहिए। "2

आत्मनिर्भर भारत पर दीनदयाल जी के विचार :-

1. परामुखापेक्षिता से आत्म निर्भरता की ओर:-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्र उन्नति, समृद्धि व् आत्मनिर्भरता के लिए न तो पश्चिमी देशों के अंधानुकरण के पक्ष में थे और न ही परमुखपेक्षी बनने में विश्वास रखते थे। बदलती हुई परिस्थितियां जो राष्ट्रानुकूल नहीं थी, उस सन्दर्भ में दीनदयाल जी ने कहा, "वर्तमान परिस्थिति का सबसे प्रमुख कारण, राष्ट्र जीवन की आत्मा का साक्षात् कार न करते हुए, उसके ऊपर विदेशी और विजातीय विचारधाराओं एवं जीवन मूल्यों को थोंपने का प्रयत्न है। शीघ्र उन्नति में दूसरे देशों का अंधानुकरण करने से "स्व "के तिरस्कार की प्रवृति पैदा हुई है। इससे राष्ट्र मानस में कुंठा घर कर गई है। '3

2. स्वतंत्रता एवं आत्मसम्मान की रक्षा:

प्रत्येक देश का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करे, उसे सुदृढ़ व् स्थाई बनाने का प्रयत्न करें, जिसके अंतर्गत वह अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हुए समृद्ध, सोद्देश्य एवं सुखी समाज के संगठन में सचेष्ट रह सके। भारत की स्वतंत्रता के उपरांत जनमन में यह सहज आकांशा जागृत हुई थी, और यह अपेक्षा की गई थी कि सदियों से परतंत्र, संघर्षरत राष्ट्र अब अपने स्वाभिमान स्वरुप एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त कर अपने घर का नव निर्माण कर सकेगा। '4

3. आर्थिक स्वतंत्रता:

आज भी हम अपनी व्यवस्था में, अव्यवस्था, अभाव, असमानताओं के कारण संघर्ष में जूझते जनमानस को देख रहे हैं। दीनदयाल जी जिस अव्यवस्था को पहले ही देख चुके थे। कि हमारी व्यवस्था का आधार सामान्य जनता के भविष्य के लिए सही नहीं है। वह दूरदर्शी थे, भविष्य दृष्टा थे, जिसे हम आज सार्थक होता देख रहे हैं। दीनदयाल जी ने कहा था, "जब तक भारत वर्ष आर्थिक दृष्टि से परमुखापेक्षी है तथा भारत की तीस कोटि संतान को आर्थिक उन्नति का समान अवसर प्राप्त नहीं, तब तक उन्नति के द्वार खुले नहीं है, तथा उसके साधन प्रस्तुत नहीं है, तब तक भारत वर्ष विश्व की प्रगति में कदापि सहायक नहीं हो सकता, न तो वह जीवन के सत्य का साक्षात्कार कर सकेगा और न मानव स्वतंत्रता का ही। "5

4.मशीन के प्रभुत्व के स्थान पर मानवीय कौशल का विकास :

दीनदयाल जी का विचार था कि "मशीन मनुष्य की सुविधा के लिए है, उसका स्थान लेने के लिए नहीं। मनुष्य मशीन का निर्माण करता है। उसका स्वामी नहीं है, उसका गुलाम नहीं है। उत्पादन के साधन की दृष्टि से उसका उपयोग अवश्य है, किन्तु वह मनुष्य को खाकर नहीं उसे खिलाकर होना चाहिए। "भारत के सन्दर्भ में दीनदयाल जी ने कहा, "भारत में कुटीर और ग्रामोउद्योग ही हमारे केंद्र हो सकते है। बड़े बड़े उद्योग, इन उद्योगों के हित में जहाँ चलना आवश्यक हो, चलाये जाये, किन्तु इनके प्रति स्वार्थी बनकर नहीं। "5 दीनदयाल जी ने कहा था, "कि यदि मशीन मनुष्य का स्थान ले ले। और उसे भूखा मारे, तो मशीन का काम उसके उदेश्यों के विपरीत होगा। इस मशीनी यंत्र विकास के सन्दर्भ में दीनदयाल जी ने कहा था, कि यह, विज्ञानं की आधुनिकतम प्रगति की उपज है, किन्तु प्रतिनिधि नहीं। "6

5. आर्थिक विकेन्द्रीयकरण :-

दीनदयाल जी के अनुसार, "जब तक एक एक व्यक्ति की विशिष्टता -विविधता को ध्यान में रख कर उसके विकास की चिंता नहीं करेंगे, तब तक मानवता की सच्ची सेवा नहीं होगी। समाजवाद व् पूंजीवाद ने मनुष्य को एक व्यवस्था के निर्जीव यंत्र का एक पुर्जा मात्र बना डाला। एक स्वतंत्र जुलाहे को समाप्त कर उसे एक विशाल कारखाने का मजदूर बना दिया गया। दर्जी के स्थान पर रेडीमेड कपडा लाकर रख दिया। मनुष्य यानि एक जंतु, जो आठ घंटे यंत्रवत मजदूरी करें और सोलह घंटे खाएं। कार्य और जीवन के बीच दीवार खड़ी कर दी गई। "दीनदयाल जी के अनुसार, "स्वरोजगार क्षेत्र जितना बड़ा होगा, उतना ही मनुष्य आगे बढ़ सकेगा, मनुष्यता का विकास हो सकेगा, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का विचार कर सकेगा। प्रत्येक मनुष्य की व्यक्तिशः आवश्यकताओं और विशेषताओं का विचार करके उसे काम देने पर उसके गुणों का विकास हो सकता है। इस तरह की विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था भारत ही विश्व को दे सकता है। ... सच्चे प्रजातंत्र का आधार आर्थिक विकेन्द्रीयकरण ही हो सकता है। अतः सिद्वान्ततः हमे छोटे छोटे उद्योगों को ही अपनाना चाहिए। "यदि अधिक आदमियों का उपयोग करने वाले छोटे छोटे कुटीर उद्योग अपनाये गए तो कम पूंजी तथा मशीनों की आवश्यकता पड़ेगी, जिससे नौकरशाही का बोझ कम होगा, विदेशी ऋण भी नहीं लेना पड़ेगा, देश की सच्ची प्रगति होगी, तथा प्रजातंत्र की नींव पक्की हो सकेगी। " 7

6. प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, न कि शोषण :-

दीनदयाल जी ने आर्थिक स्वाधीनता के सन्दर्भ में भी अपने विचार दिए है, उन्होंने कहा, "हमारे पास मानव, प्राकृतिक तथा वित्तीय सभी प्रकार के साधन प्रयाप्त है। आवश्यकता है कि वर्तमान तथा विकासमान साधनों के अनुरूप योजना बनाई जाये। आज तक भारत की

योजना का आधार विदेशी साधन, मशीन, तंत्रज्ञान, पूंजी और कच्चे माल का बाजार रहा है। यहाँ जो नहीं है, उसकी प्राप्ति की योजना बनाई जाती है। किन्तु जो है उसको बचाने की तथा उसके सहारे नए नए निर्माण का विचार नहीं किया जाता। हमने खेती और स्वदेशी उद्योगों की और दुर्लक्ष्य किया तथा हमारे लिए अहितकारी तथा अप्रतिष्ठापरक शर्तों पर भी विदेशी गठवन्धनों का स्वागत किया। यदि हमे स्वतंत्रता बचानी है तो आर्थिक क्षेत्र में स्वावलंबी बनना होगा। भावी योजनाए इसी आधार पर बनाई जाये। "8

7. अंधाधुंध अनुकरण एवं नगरीकरण का विरोध:

असीम विदेशी, तंत्र विज्ञानं तथा नगरीकरण का दीनदयाल जी विरोध करते थे। उनके विरोध का यह भी एक कारण है। वे कहते थे, "बिलकुल अनिवार्य हो, तभी और उतनी ही विदेशी सहायता लेनी चाहिए और वह सहायता यथासम्भव विना शर्त हो। इन परहेजों का पालन करते हुए खड़े होने वाले उद्योग राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए उपयोगी सिद्व होंगे। विदेशी सहायता की बैसाखी को फैंक देने से ही भारत इससे आगे अपनी प्रगति कर सकेगा। क्योंकि विदेशी सहायता के कारण हमारी साडी आदतें ही खराब हो गई है। हमने स्वदेशी के महामंत्र को भुला दिया है। हम उसे भुला दे, यही विदेशी शक्तियों की योजना है। भारत के आर्थिक प्रश्न विदेशी सहायता कम पड़ने के कारण विकट नहीं हुए है, बल्कि इसलिए कि आवश्यकता से अधिक सहायता आ रही है और फलस्वरूप हम स्वदेशी एवं स्वावलंबन को भुलाते जा रहे है। "9

8. स्वदेशी का विकल्प:

भारत की अर्थव्यवस्था का ढांचा स्वदेशी हो, तो हमारा स्वराज्य समृद्ध व् आत्मनिर्भर बनेगा, ये विचार दीनदयाल जी, उस समय ही दे चुके थे, जब स्वतंत्र भारत के आर्थिक ढांचे की नींव रखी जा रही थी, क्योकि क्योकि दीनदयाल जी तब जानते थे कि हमारे आर्थिक ढांचे की नींव मजबूती से नहीं रखी जा रही, यह विपरीत परिस्थितियों में डगमगा सकती है और हुआ भी यही। आज आत्मनिर्भर भारत का विचार सम्पूर्ण राष्ट्र के सम्मुख एक ज्वलंत विषय है। और देश की सरकार भी इस समय आत्मनिर्भर भारत के विचार पर गंभीर है।

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि आज यदि समाज, जनमानस, सरकार, विपक्ष, स्वयं सेवी संस्थाए, गैर सरकारी संस्थाए सब मिलकर इस अवसर का लाभ उठाकर राष्ट्र की आर्थिक निति की नींव अपने संसाधनों से मजबूती से डालें, खादी ग्रामोउद्योग, लघु, कुटीर उद्योग, को मजबूती से खड़ा कर, विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की मजबूती से नीव डालें तो भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र क्र रूप में, समृद्ध व् सशक्त रूप में उभरेगा, व् दुनिया का सिरमौर बन पायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ कुलदीप चंद अग्निहोत्री, लोक चेतना और अध्यात्मिक साधना के वाहक श्री गुरु नानक देव जी, प्रभात पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 185
2. डॉक्टर चमन लाल गुप्त, (पंचनद, शोध संस्थान द्वारा चंडीगढ़ में आयोजित गोष्ठी में व्यक्त विचार)
3. अमरजीत सिंह, "एकात्ममानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय", प्रभात पपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2019, पेज 267
2. दीनदयाल उपाध्याय, "एकात्ममानववाद तत्व, मीमांसा, सिदांत -विवेचन", प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पेज, 46
3. दीनदयाल उपाध्याय, "एकात्ममानववाद तत्व, मीमांसा, सिदांत -विवेचन", प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पेज, 45
4. अमरजीत सिंह, "एकात्ममानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय", प्रभात पपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2019, पेज 267
5. अमरजीत सिंह, "मै दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ", प्रभात पपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज, 95
6. अमरजीत सिंह, "मै दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ", प्रभात पपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज, 97
7. अमरजीत सिंह, "मै दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ", प्रभात पपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज, 100, 101
8. अमरजीत सिंह, "मै दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ", प्रभात पपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज, 108, 109
9. हरीश दत्त शर्मा, "राष्ट्रिय जीवनी माला, पंडित दीनदयाल उपाध्याय", फ्यूजन बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पेज, 141, 142.